बाबा जी सदैव मेरे साथ हैं

सीता मिशॅल शे द्वारा लिखित

१९७० के दशक के मध्य में, मैं न्यूयॉर्क शहर में एक अभिनेत्री के रूप में कार्य कर रही थी। अभिनय करते समय, कई अवसरों पर मैंने पाया कि मैं एक ऐसे स्रोत से जुड़ रही हूँ जो असीम व स्वतःस्फुरित प्रेरणा और ज्ञान से पूर्ण है। मैं जानना चाहती थी कि रचनात्मकता तथा सत्य के इस असाधारण स्रोत को पुनः कैसे पाया जा सकता है। तथापि, ऐसा तभी हो पाया जब मुझे अपने पहले शक्तिपात ध्यान-शिविर में शक्तिपात प्राप्त हुआ और मैंने अनुभव किया कि यह स्थान तो मेरी अन्तरस्थ आत्मा ही है और यह भी कि मन्त्र द्वारा मैं इससे बारम्बार जुड़ सकती हूँ।

जब मुझे पता चला कि बाबा मुक्तानन्द कॅट्स्किल में स्थित एक रिज़ॉर्ट, डीविले होटल में ठहरने वाले हैं, मैंने तत्काल ही वहाँ जाकर एक माह रुकने के लिए आवेदन किया। यह रिज़ॉर्ट वर्ष १९७६ की गर्मियों में बाबा जी का अस्थायी आश्रम बन गया था। मैं बाबा जी से व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहती थी और यह अनुभव करना चाहती थी कि लम्बे समय के लिए साधना में लीन हो जाना और एक सिद्धगुरु के सान्निध्य में रहना कैसा होता है।

डीविले में उस माह के दौरान सिद्धयोग की सिखावनियों व अभ्यासों के प्रति मेरा जुड़ाव और भी गहरा होता गया और मैंने पाया कि मैं उस आनन्द से सम्मोहित होती जा रही हूँ जो बाबा जी से प्रस्फुटित होता था, विशेषरूप से उनकी खिलखिलाती हुई हँसी की गूँज में निहित आनन्द। हर बीतते दिन के साथ मुझे महसूस होने लगा कि जैसे-जैसे मैं बाबा जी के प्रेम के माधुर्य की अनुभूति करती जा रही हूँ, वे दीवारें जो मेरे हृदय को घेरे हुए थीं, पिघलकर लुप्त होती जा रही हैं। बाबा जी के साथ जितना अधिक सत्संग मिलता और उनके दर्शन होते, उतनी ही उनके सान्निध्य में रहने की मेरी ललक बढ़ती गई।

मेरी यह ललक उस शक्तिपात ध्यान-शिविर के दौरान और भी बढ़ गई जो बाबा जी की यूनाइटेड स्टेट्स् की यात्रा के समापन के कुछ समय पहले हुआ था। इसके बाद बाबा जी भारत लौटने वाले थे। मैं ध्यान-हॉल में बहुत पीछे बैठी थी और मेरे आगे थीं, ध्यान करने वाले लोगों की अनेकानेक पंक्तियाँ। शक्तिपात ध्यान-शिविरों में बाबा जी शक्तिपात दीक्षा प्रदान करने के लिए साधकों के बीच घूमते हुए

उनके सिर पर अपने मोरपंख के गुच्छे से स्पर्श करते जाते। मुझे कक्ष में उनके घूमने की ध्वनि सुनाई दे रही थी। मैंने आँखें खोलीं और बाबा जी के मोरपंखों से आती हुई हल्की-हल्की आवाज़ को सुनने का आनन्द लेने लगी, साथ ही हॉल में बाबा जी द्वारा लोगों को शक्तिपात प्रदान करते हुए भी मैं देख रही थी। इस अनमोल उपहार में निहित अद्‌भुत करुणा के दर्शन करते हुए मेरे मन में यह इच्छा जागी कि काश बाबा जी के सान्निध्य में होने का यह अमूल्य समय बढ़ जाए! मैंने अपने दिमाग़ को टटोला कि मैं बाबा जी को अपने साथ कैसे रख सकती हूँ।

बाबा जी अकसर हमें बताया करते थे कि श्रीगुरु, मन्त्र और मन्त्रजप करने वाला—ये एक ही हैं। ऐसा सोचते हुए कि मेरे प्रश्न का उत्तर शायद यही हो, मैंने आँखें बन्द कर लीं और स्वयं से कहा कि सब कुछ मेरे अन्दर ही है, ऐसा समझकर मैं अन्तर में मन्त्रजप करूँ। ॐ नमः शिवाय! ॐ नमः शिवाय! मैं बारम्बार इसे जपने लगी।

अचानक ही, मन्त्र मेरे मन से निकलकर, मेरी देह में कहीं गहरे उतर गया। मेरे अन्तर में एक उत्कृष्ट आनन्द की अनुभूति उभरी और मैंने अपने अन्दर बाबा जी की उपस्थिति को महसूस किया। बाबा जी के हॉल में घूमने के साथ-साथ, यह अनुभूति भी मेरे अन्दर घूमने लगी। एकदम से मेरी आँखें खुल गईं और कक्ष में बाबा जी को खोजने लगीं। यह देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गई कि बाबा जी कक्ष के दूसरी ओर से सीधे मेरी ही ओर देख रहे थे! प्रेम से अभिभूत होकर मैंने अपना सिर झुकाया और इससे पहले कि मैं जान पाऊँ, बाबा जी ठीक मेरे पीछे ही खड़े थे और उनका हाथ मेरे सिर पर था। मुझे लगा कि वे मुझे इस बात की पुष्टि करा रहे हैं कि श्रीगुरु के साथ, आत्मा के साथ अन्तर-सम्बन्ध होने की मुझे जो गहन अनुभूति हुई थी, वह सत्य है।

इस सिखावनी का प्रत्यक्ष अनुभव कराने के लिए मैं बाबा जी के प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगी कि श्रीगुरु, मन्त्र तथा जपकर्ता—ये एक ही हैं। मेरी अब तक की लगभग छियालिस वर्ष की साधना में मैंने देखा है कि मैं चाहे कहीं भी रहूँ, कुछ भी कर रही हूँ, मन्त्रजप द्वारा मैं अपना ध्यान अन्तर की ओर मोड़ सकती हूँ और आत्मा से जुड़ सकती हूँ जो समस्त सृष्टि का रचनात्मक स्रोत है, सच्चे ज्ञान का आधार है।
बाबा जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।